RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452 Raaso
**Refreed Journal**

# रासो

अन्तर्विषयी त्रैमासिक शोध पत्रिका

वर्ष-17, अंक-1, दिसम्बर 2023 जनवरी फरवरी 2024

RNI No. RAJHIN/2007/26996
ISSN 0976-7452Raaso
**Refreed Journal**

# रास्रो

**इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन की त्रैमासिक शोध पत्रिका**

वर्ष-17 अंक - 1 दिसम्बर 2023-जनवरी-फरवरी-2024

**सम्पादक**
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

**निदेशक**
कॉम्पिटिशन प्लस संस्थान, ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स, अजमेर (राजस्थान)

**संरक्षक**

* **प्रो. जे. पी. शर्मा** - पूर्व कुलपति, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

**सलाहकार मण्डल**

* **प्रो. विभा उपाध्याय** - प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)
* **नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** - प्रसिद्ध साहित्यकार तथा संस्कृति चिंतक, इन्दौर (मध्य प्रदेश)
* **प्रो. टी.के. माथुर** - पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राज.)
* **डॉ. रमेश अग्रवाल** - पूर्व स्थानीय सम्पादक, दैनिक भास्कर, अजमेर (राजस्थान)
* **डॉ. गौरव बिस्सा** - सहआचार्य, विभागाध्यक्ष, प्रबंधा अध्ययन विभाग, राजकीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)
* **डॉ. बीना शर्मा** - पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सावित्री कन्या महाविद्यालय, अजमेर
* **प्रो. शोभा आर. मिश्रा** - आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, माधव महाविद्यालय, उज्जैन
* **डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी** - पूर्व सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली।

☆ उप सम्पादक
**डॉ. रीता पारीक**
*प्राचार्य*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

☆ प्रबन्ध सम्पादक
**डॉ. मृत्युंजय शर्मा**
*सह-आचार्य*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

☆ सहायक सम्पादक
**डॉ. निष्काम शर्मा**

☆ शब्द संयोजन
**मुकेश कुमार माहेश्वरी**

☆ सम्पादकीय/सचिव
व्यवस्थापकीय कार्यालय
**सृजन संस्थान,**
आचमन, वेद विहार,
लोहाखान, अजमेर-06
दूरभाष : 0145-2426610
e-mail : rasoajmjournal@gmail.com

☆ प्रकाशक :
**पुष्पा शर्मा**
सृजन संस्थान,
द्वारा आचमन पब्लिकेशन्स,
अजमेर

☆ मुद्रक :
**मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स,**
केसरगंज, अजमेर

☆ कम्प्यूटराइज्ड सेटिंग :
**श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स**
132, पंचवटी कॉलोनी,
अजमेर दूरभाष : 0145-2442701

**सहयोग दर**

* वार्षिक सदस्यता - 500 रु. (चार अंक) संस्थाओं हेतु - 600 रु. (चार अंक)
कृपया चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर श्रीमती पुष्पा शर्मा, प्रकाशक, आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर- 305006 के नाम भेजें।

प्रकाशक-श्रीमती पुष्पा शर्मा, 51/1509, वेद विहार, लोहाखान, अजमेर द्वारा मैसर्स सृजन संस्थान, अजमेर की ओर से प्रकाशित एवं मुद्रक-श्रीमती उषा गर्ग द्वारा मैसर्स आर्य प्रिन्टर्स, केसरगंज, अजमेर से मुद्रित।

# प्राचीन भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना विशेष कथाओं के संदर्भ में

**राजीव कुमार शर्मा**
*सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)*
*हुकुमचन्द नोबल इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर*

भारतीय प्राचीन साहित्य में विभिन्न भाषाओं—संस्कृत, तमिल, तेलुगु, प्राकृत, पालि तथा अपभ्रंश—के माध्यम से कथाओं का एक विस्तृत संसार विकसित हुआ, जिसने भारतीय लोकजीवन के कितने ही विविध आयामों को उद्घाटित किया है। वर्तमान युग में, जबकि सांस्कृतिक धारणाएँ, जीवन-शैलियाँ और सामाजिक मूल्य परिवर्तनशील परिस्थितियों के कारण संशयग्रस्त प्रतीत होते हैं, तब भारतीय मनीषियों की जीवन-दृष्टि अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकती है। आज समाज के सामने जो अनपेक्षित समस्याएँ उपस्थित हैं, वे इस बात का द्योतक हैं कि सुव्यवस्थित, संतुलित और समन्वित जीवन-दर्शन की पुनर्स्थापना की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक अनुभूत की जा रही है। यह आवश्यकता प्राचीन साहित्य के द्वारा, विशेषत: कथाओं के माध्यम से, सरलता से पूरी हो सकती है; क्योंकि दार्शनिक, स्मृतिमूलक और आचारविधि से संबंधित विशाल ग्रंथों का गंभीर अध्ययन सामान्य व्यक्ति के लिए सहज नहीं होता, जबकि कथा-रूप में प्रस्तुत विचार मन को स्पर्श करते हैं और व्यवहार में तुरंत उतरते हैं।

भारतीय मनीषियों ने इस तथ्य को समझते हुए कथा को सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य-चेतना का वाहक माध्यम बनाया। वैदिक साहित्य में अनेक कथाएँ न केवल धार्मिक आस्थाओं को पोषित करती हैं, बल्कि वे मानव-व्यवहार, नैतिकता और सामाजिक संतुलन के संकेत भी देती हैं। रामायण और महाभारत की कथाएँ केवल पराक्रम और युद्ध का इतिहास नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों, धर्म, कर्तव्य, त्याग और मर्यादा के आदर्शों का भी प्रतिपादन करती हैं। पुराणों में वर्णित कथाओं का उद्देश्य केवल आश्चर्यजनक घटनाओं का वर्णन करना नहीं, बल्कि लोकजीवन को सद्कर्म, परोपकार, सहिष्णुता तथा सामाजिक मर्यादा के सुदृढ़ संदेश प्रदान करना है।

इसी प्रकार बौद्ध और जैन साहित्य में कथा को नैतिक विकास का महत्वपूर्ण साधन माना गया। जातक-कथाएँ करुणा, दया, प्रेम, सत्य तथा मानवीय उदात्तता के मूल्य को सहज शैली में प्रस्तुत करती हैं। जैन आचार्यों द्वारा रचित कथाएँ मानव में तप, संयम और आत्मशुद्धि की प्रेरणा उत्पन्न करती हैं। समय के साथ कथा-साहित्य की यह परंपरा और भी व्यापक हुई और पंचतंत्र, बृहत्कथा, कथासरित्सागर, बृहत्कथा मंजरी, कथाकोश, बेताल-पच्चीसी आदि ग्रंथों की रचना हुई, जिनमें नीतिशिक्षा, व्यवहारिक समझ, सामाजिक संबंधों की मर्यादा और मानव-जीवन की विविध स्थितियों को स्पष्ट रूप में प्रस्तुत किया गया।

इन सभी कथाओं की विशेषता यह है कि इनमें केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज को सही

शोध-पत्र में उल्लिखित सन्दर्भ एवं विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं।

दिशा देने की क्षमता भी निहित है। सामान्य सी लगने वाली घटना भी समाज और संस्कृति का कोई सारगर्भित संदेश प्रदान करती है। यही कारण है कि इन कथाओं ने भारतीय समाज के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज भी ये मूल्य चेतना की दृष्टि से उतनी ही प्रासंगिक हैं। वर्तमान सामाजिक विसंगतियों के बीच यदि हम इन कथाओं की अंतर्धाराओं को समझ सकें, तो प्राचीन चिंतन की राह आधुनिक जीवन को संतुलित करने में सक्रिय मार्गदर्शक सिद्ध हो सकती है।

भारतीय संस्कृति सदैव विवेक, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता और सद्भावना की प्रतीक रही है। यह एक ऐसा जीवन दर्शन प्रस्तुत करती है जिसमें प्रेम और सद्भावना के क्षेत्र में स्वयं ही त्याग और परिग्रह का सम्यक संतुलन विकसित हो जाता है। यही कारण है कि विवेक, प्रेम, सहयोग, सहिष्णुता और सद्भावना भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग बन गये हैं। जीवन-मूल्यों और उदात्त भावनाओं को प्रकट करने वाली अनेक कथाएँ भारतीय प्राचीन साहित्य में संरक्षित हैं, जो समाज के आचरण और संस्कृति के मूल्य-बोध का प्रभावी माध्यम रही हैं।

प्राचीन कथाएँ न केवल मनोरंजन का साधन रही हैं, बल्कि ये हजारों वर्षों से लगातार विकासशील भारतीय जीवन-शैली में निहित सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्त करती रही हैं। इनमें समाज और संस्कृति के अनेक आयाम और उनके प्रस्थान-बिंदु स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। समाज की संरचना में व्यक्ति, परिवार, रीति-रिवाज, आचार, विचार, व्यवहार, पर्व-त्यौहार तथा अनेक अन्य अपेक्षित विषय सम्मिलित हैं। इसी प्रकार संस्कृति का दायरा और भी व्यापक है। मूल्य-बोध और आस्तिकता पर आधारित विविध देव-परिकल्पनाएँ, जीवन-जगत्, प्रकृति, धर्म-चेतना और नैतिक मूल्य इन कथाओं में लौकिक और पारलौकिक संदर्भ के साथ प्रभावशाली रूप में समाहित हैं।

ऐसा सैद्धांतिक विवेचन केवल कुछ प्रतिभावान और समर्थ व्यक्तियों के एकांत चिंतन का विषय नहीं रह जाता, बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति के समग्र स्वरूप को कथा के माध्यम से कलात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया। समय-समय पर लेखकों ने कथाओं को माध्यम अपनाकर इन तत्त्वों को न केवल मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि समाज के द्वारा आत्मसात किए जाने योग्य बनाकर उनकी निरंतरता को युगों तक बनाए रखा। यही कारण है कि भारतीय कथाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का स्थायी वाहक भी रही हैं।

'अकीर्ति जातक' कथा हमें यह सिखाती है कि लोभ, द्वेष और मूर्ख लोगों के संपर्क से दूर रहना चाहिए, बुद्धिमान लोगों के साथ समय बिताना चाहिए, अपनी जरूरतें पूरी करनी चाहिए और सदाचारी लोगों की मदद करने की इच्छा हमेशा बनाए रखनी चाहिए।

कथा के अनुसार, प्राचीन समय में वाराणसी में राजा ब्रह्मदत्त के समय एक ब्राह्मण कुल में अकीर्ति नाम का एक पुत्र जन्मा। उनके माता-पिता की मृत्यु के बाद अकीर्ति ने अपना सारा धन दान कर दिया और अपनी बहन को साथ लेकर संन्यास ले लिया। उन्होंने एक पर्णकुटी बनाकर एक सुंदर जगह पर रहने का निर्णय किया। वहाँ उन्हें सम्मान और आदर मिला, लेकिन वे संतुष्ट नहीं हुए और दूसरे स्थानों, जैसे दमिल राष्ट्र और फिर नागद्वीप, की ओर चले।

अकीर्ति बेहद सरल और अल्पेक्षु थे। वे कभी किसी से माँगने नहीं जाते थे और केवल वृक्षों के

फलों से अपना जीवन-निर्वाह करते थे। उनके संयम और तपस्या को देखकर शक्र ने उनकी परीक्षा लेने का निर्णय लिया। शक्र ब्राह्मण का रूप धारण करके उनके पास आया और भोजन की याचना की। अकीर्ति ने उदारता दिखाते हुए ब्राह्मण को उबले हुए पत्ते दे दिए और स्वयं तीन दिन तक भूखे रहे।

जब शक्र ने उनसे पूछा कि वे किसकी तपस्या कर रहे हैं, तो अकीर्ति ने कहा कि उनका उद्देश्य धन नहीं, बल्कि सर्वज्ञता प्राप्त करना है। शक्र ने उनसे वर मांगने के लिए कहा। अकीर्ति ने वर के रूप में यह प्रार्थना की कि उनके जीवन में लोभ, द्वेष और मूर्ख लोगों का प्रभाव न हो, उन्हें केवल बुद्धिमान व्यक्ति दिखें, उन्हें इतना भोजन मिले कि वे हमेशा सदाचारी लोगों को दान दे सकें, और दान देने में उन्हें कभी पछतावा न हो बल्कि हमेशा प्रसन्नता अनुभव हो। शक्र ने उनकी इच्छा स्वीकार की और क्षमा माँगकर वहाँ से चले गए।

इस कथा से हमें यह सीख मिलती है कि संयम, त्याग, उदारता और बुद्धिमानी के साथ जीवन जीना ही सच्चे मूल्य हैं। अकीर्ति का जीवन हमें यह भी सिखाता है कि केवल ज्ञान और धर्म का पालन ही नहीं, बल्कि दूसरों की भलाई में खुशी ढूँढना भी महत्वपूर्ण है।

'पंचतंत्र' की कथाएँ भारतीय समाज और संस्कृति में निहित सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की चेतना फैलाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये कथाएँ बच्चों और युवाओं के मन में उदात्त भावनाओं का अंकुरण करती हैं और उन्हें सदाचार, विवेक, करुणा, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी की ओर प्रेरित करती हैं। इन कथाओं में न केवल नैतिक शिक्षा है, बल्कि सामाजिक व्यवहार और जीवन-शैली के मूल तत्व भी स्पष्ट रूप में प्रकट होते हैं। विशेष रूप से पशु-पक्षियों और उनके संवादों के माध्यम से पाठक को सहज और रोचक शैली में समाज और संस्कृति की गहन समझ मिलती है।

पंचतंत्रकार ने परिवारिक सद्भाव, अतिथि-सत्कार और करुणा की शिक्षा देने के लिए 'व्याध' और 'कपोती-कपोत' की कथा रची है। कथा के अनुसार, एक घने जंगल में एक बहेलिया घूम रहा था। उसका व्यवहार बहुत ही नीच और अहितकारी था, जिसके कारण उसके न कोई मित्र थे, न कोई संबंधी, और न कोई बंधु। उसने एक दिन एक कबूतरी को पकड़कर पिंजड़े में बंद कर दिया। उसी समय भयंकर वर्षा होने लगी, और व्याध भीगकर ठंड से काँपने लगा। भूख और ठंड से पीड़ित होकर वह एक वृक्ष के पास पहुँचा। वहाँ उस वृक्ष पर एक कपोत अपनी पत्नी के वियोग में विलाप कर रहा था।

कपोती ने अपने पति से कहा कि व्याध ठंड और भूख से परेशान है, अत: उसे अतिथि सत्कार करना चाहिए। कपोत ने तुरंत व्याध का स्वागत किया, कहीं से अंगार लाया और सूखे पत्तों में आग जलाई, जिससे व्याध को खाने के लिए गर्म भोजन मिल सका। व्याध इस करुणा और उदारता को देखकर अत्यंत दुखी हुआ और अपने पिछले नीच कृत्यों पर खेद व्यक्त किया। उसने कबूतरी को भी छोड़ दिया। कबूतरी ने अपने पति को आग में देखकर स्वयं को भी उसमें डाल दिया।

इस कथा के माध्यम से स्पष्ट होता है कि जीवन में गुण और सदाचार का महत्व अत्यधिक है। जो व्यक्ति गुणवान और सदाचारी नहीं होता, उसके पास न कोई मित्र होता है, न कोई संबंधी, और न समाज में उसका कोई सहारा होता है। केवल वही व्यक्ति सामाजिक सद्भावना और सहयोग का अनुभव कर सकता है, जो अपने व्यवहार में नैतिकता, करुणा और उदारता का पालन करता है।

भारतीय प्राचीन कथाओं में यही विशेषता है कि वे न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समाज और संस्कृति के मूल्यों को स्थायी रूप से स्थापित करती हैं। यही कारण है कि आज भी लेखक और साहित्यकार इन कथाओं को साहित्य में दृष्टांत, प्रतीक और अलंकार के रूप में प्रयोग करते हैं। साथ ही, मूल्य-चेतना और नैतिक शिक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से ये कथाएँ लोक-जीवन और समाज में व्यवहारिक दृष्टांत के रूप में निरंतर उपयोग की जाती हैं।

इस प्रकार पंचतंत्र और अन्य प्राचीन कथाएँ हमें यह शिक्षा देती हैं कि जीवन में विवेक, करुणा, सहयोग, अतिथि-सत्कार और सदाचार के मूल्यों को अपनाना न केवल व्यक्तिगत जीवन को समृद्ध बनाता है, बल्कि समाज को भी सशक्त और संतुलित बनाए रखता है। प्राचीन कथाओं का यह संदेश आज के समय में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि हजारों वर्ष पहले था।

निष्कर्षत: प्राचीन भारतीय कथाएँ समाज और संस्कृति के नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रमुख स्रोत रही हैं। वे केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन में सदाचार, संयम, करुणा, सहयोग, अतिथि-सत्कार और विवेक जैसे गुण विकसित करने का माध्यम हैं। 'अकीर्ति जातक' और 'व्याध-कपोती' जैसी कथाएँ हमें लोभ, द्वेष और मूर्ख संसर्ग से दूर रहकर बुद्धिमान और सदाचारी जीवन जीने की शिक्षा देती हैं। प्राचीन कथाओं में निहित संदेश आज भी प्रासंगिक हैं और समाज में मूल्य-चेतना, नैतिकता और सांस्कृतिक समझ बढ़ाने का मार्गदर्शन करते हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


1. *जातक कथा, 'अकीर्ति जातक ' — अनुवाद: डॉ. हरिदत्त शर्मा; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली; प्रथम संस्करण: 1986*
2. *जातक (The Jataka, Pali Text) — संपादक: प्रो. ई. बी. कावेलरस् (Cowell); पाली टेक्स्ट सोसाइटी, लंदन; 1897; Vol. II*
3. *पालि कथा-साहित्य परिचय, डॉ. श्यामसुन्दर दास; प्रकाशक: रामनारायण लाल, प्रयाग; संस्करण: 1965*
4. *बौद्ध साहित्य और दर्शन, डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी; भारतीय विद्या भवन, मुंबई; संस्करण: 1972*
5. *पंचतंत्र, अनुवाद: विष्णु शर्मा (हिन्दी अनुवाद - पद्मनंदन शर्मा), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण: 2008*
6. *भारतीय नीति-कथा साहित्य का सामाजिक दर्शन, डॉ. राधाकृष्ण शर्मा, नाग प्रकाशन, जयपुर,1992*
7. *भारतीय कथा-साहित्य में मूल्य-चेतना, डॉ. सत्यपाल सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2001*
8. *नैतिक मूल्य और भारतीय लोक-कथाएँ, प्रो. के. एस. शुक्ला, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी, 1998*
9. *भारतीय संस्कृति और नीति कथाएँ (सामाजिक एवं नैतिक मूल्य), आचार्य चतुर्वेदी, भारतीय साहित्य सेवा, लखनऊ, 1976*
10. *संस्कृति-संचरण में कथा-साहित्य की भूमिका, डॉ. वीरेन्द्र कुमार, राजपाल एंड संस, नई दिल्ली, 1995*